17 जनवरी 2016, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI प्रतिदिन
सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 38, अंक : 20 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जनवरी (द्वितीय), 2016 (वीर नि. संवत्-2542) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की वार्षिक -

साहित्यिक व खेलकूद प्रतियोगिताऐं सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल महाविद्यालय में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु महाविद्यालय द्वारा दिनाँक 5 जनवरी 2016 से 10 जनवरी 2016 तक विभिन्न साहित्यिक प्रतियोगितायें सम्पन्न हुई। दिनांक 5 जनवरी को प्रात: प्रवचनोपरान्त श्रीमती कमला भारिल्ल द्वारा प्रतियोगिताओं का उद्घाटन हुआ।

दिनांक 5 जनवरी को प्रात: 'जिनश्रुत की हमारे जीवन में उपयोगिता' विषय पर आयोजित **भाषण प्रतियोगिता (उपाध्याय वर्ग)** में सम्मेद जैन खोत कोल्हापुर ने प्रथम एवं विनय जैन मुम्बई ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। अध्यक्षता श्रीमती कमला भारिल्ल ने की। निर्णायक के रूप में डॉ. आशा शर्मा एवं श्री राजेशजी शास्त्री थे। संचालन गौरव जैन भिण्ड व अविनाश जैन कोलारस ने किया।

दिनांक 5 जनवरी को रात्रि **छंदपाठ प्रतियोगिता** में ऋषभ जैन दिल्ली प्रथम व सौरभ जैन फूप द्वितीय स्थान पर रहे। कार्यक्रम के अध्यक्ष पण्डित शांतिकुमारजी पाटील थे। निर्णायक के रूप में श्री संदीपजी छाबड़ा एवं पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री उपस्थित थे। प्रतियोगिता का संचालन अभिषेक जैन हीरापुर एवं विनीत जैन हटा ने किया।

दिनांक 6 जनवरी को प्रात: 'आखिर क्यों जानें सल्लेखना' विषय पर आयोजित **भाषण प्रतियोगिता (शास्त्री वर्ग)** में पारस जैन खेकड़ा ने प्रथम एवं रमन जैन मौ ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने की। निर्णायक पण्डित मनीषजी कहान एवं पण्डित संजीवजी शास्त्री थे। संचालन वैभव जैन भिण्ड व विनय जैन हटा ने किया।

दिनांक 6 जनवरी को रात्रि में **भजन प्रतियोगिता** के अन्तर्गत वीकेश जैन खड़ैरी ने प्रथम एवं रिमांशु जैन लांबाखोह ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. स्वर्णलता जैन नागपुर ने की। निर्णायक श्रीमती परिणति जैन विदिशा व पण्डित अविनाशजी शास्त्री थे। संचालन जितेन्द्र जैन सादपुर एवं सौरभ जैन फूप ने किया।

दिनांक 7 जनवरी को प्रात: **उपाध्याय वर्ग की तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता में** श्रुति जैन जयपुर ने प्रथम एवं सोमिल जैन दलपतपुर व अरिहंत जैन भिण्ड ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल ने की। निर्णायक पण्डित पीयूषजी शास्त्री एवं पण्डित उदयजी चौगुले थे। संचालन मनीष जैन भिण्ड व अंकित जैन धार ने किया।

दिनांक 7 जनवरी को रात्रि में **काव्यपाठ प्रतियोगिता** के अन्तर्गत पीयूष जैन गौरझामर व रिमांशु जैन लांबाखोह ने प्रथम एवं अर्पित जैन ललितपुर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अखिलजी बंसल ने की। निर्णायक डॉ. भागचंदजी जैन पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं पण्डित परेशजी शास्त्री थे। संचालन अभिषेक जैन हीरापुर व अनुभव जैन झालावाड़ ने किया।

दिनांक 8 जनवरी को प्रात: **अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान प्रतीक जैन विदिशा व अमन जैन दिल्ली एवं द्वितीय स्थान पारस जैन खेकड़ा व प्रशांत जैन खेकड़ा ने प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्रीमती मनीषा सूद एवं निर्णायक के रूप में विदुषी प्रतीति पाटील एवं शुभिता जैन उपस्थित थे। संचालन अनुभूति जैन दिल्ली व निधि जैन खनियांधाना ने किया।

दिनांक 9 जनवरी को प्रात: में **संस्कृत संभाषण प्रतियोगिता** में चर्चित जैन खनियांधाना ने प्रथम एवं ऋषभ जैन दिल्ली ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. श्रीयांसजी सिंघई ने की। निर्णायक पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर व श्री रमेशजी शर्मा जयपुर थे। संचालन वीतराग बसवाडे कोल्हापुर व गौरव उखलकर कारंजा ने किया।

दिनांक 9 जनवरी को रात्रि में **शास्त्री वर्ग की तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता** में रमन जैन मौ ने प्रथम एवं ऋषभ जैन दिल्ली ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. दीपकजी जैन वैद्य ने की तथा निर्णायक के रूप में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा व पण्डित प्रमोदजी शास्त्री शाहगढ उपस्थित थे। मुख्य अतिथि के रूप में पण्डित संजयजी सेठी जयपुर मंचासीन थे। संचालन विनीत जैन हटा व रोहन घाटे कारंजा ने किया।

दिनांक 10 जनवरी को रात्रि में **अंत्याक्षरी प्रतियोगिता** के अन्तर्गत अभिषेक जैन हीरापुर व जितेन्द्र जैन सादपुर ने प्रथम तथा शुभांशु जैन कोटा व मधुर जैन सागर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष पण्डित संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा थे। निर्णायक श्रीमती ज्योति सेठी व पण्डित गोमटेशजी शास्त्री थे। संचालन ऋषभ जैन मौ व अरविन्द जैन ललितपुर ने किया।

इसी क्रम में दिनांक 26 दिसम्बर 2015 से 2 जनवरी 2016 तक खेलकूद प्रतियोगिताओं का भी आयोजन हुआ।

बॉलीवॉल प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर शास्त्री द्वितीय वर्ष की मंगलम टीम तथा द्वितीय स्थान पर शास्त्री तृतीय वर्ष की जयगोमटेश टीम रही। **कबड्डी प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान पर जयगोमटेश टीम एवं द्वितीय स्थान पर मंगलम् ए टीम रही। **खो-खो प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान पर उपाध्याय वरिष्ठ की आत्मन् टीम एवं द्वितीय स्थान पर उपाध्याय कनिष्ठ की

(शेष पृष्ठ 3 पर ...)

सम्पादकीय –

दिगम्बर जैन साधु की आहारचर्या

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

वर्षाऋतु का समय, कभी घनघोर घटायें, कभी रिमझिम-रिमझिम बरसात, कभी ओले तो कभी तूफान, कीट-पतंगों, मक्खी-मच्छरों का संचार, कीड़े-मकोड़ों, चीटी-चीटियों, लट-केचुओं आदि सूक्ष्म जीवों की भरमार, जंगल में जहाँ देखो वहाँ चारों ओर हरियाली ही हरियाली, पाँव रखने को भी ऐसी कोई जगह खाली नहीं थी जहाँ हरियाली न हो। पगडंडियों में भी हरियाली उग आई थी। कच्चे रास्तों में जहाँ देखो वहीं पानी और कीचड़ ही कीचड़ भरा था।

ऐसी स्थिति में अहिंसा महाव्रत के धारी वनवासी साधुसंघ का केवल आहार के निमित्त सुदूरवर्ती वन से नगर में आना-जाना संभव नहीं था और नगर में साधु रहते नहीं है; क्योंकि गृहस्थों का सान्निध्य, नगर का कोलाहल तथा गृहस्थों के आवास उनकी आत्मसाधना के अनुकूल नहीं होते।

नगरों में तो वे केवल आहार के लिये ही आते हैं, सो उस समय भी बैठना ठीक नहीं मानते। अत: खड़े-खड़े ही आहार लेकर तुरन्त वापस चले जाते हैं। इसकारण मुनि संघ को एक क्षण भी गृहस्थों के पास बैठना-उठना इष्ट नहीं था। यद्यपि उन्हें गृहस्थों से कोई द्वेष नहीं था; किन्तु वे जिन राग-द्वेष के उत्पादक प्रसंगों का त्याग कर चुके हैं, गृहस्थों के पास तो प्राय: उन्हीं प्रसंगों की चर्चा-वार्ता होती है। अत: आचार्यों का भी यही आदेश होता है कि गृहस्थों के सम्पर्क में साधु अधिक न रहें। इस कारण दिगम्बर साधुओं के संघ वर्षायोग के लिये ऐसा एकांत स्थान वन प्रदेश चुनते हैं जो नगर के न अति निकट हो और न अति दूर।

एक दिगम्बर साधुसंघ अपना चातुर्मास स्थापित करने के लिये किसी ऐसे ही वन प्रदेश की तलाश में था, जो नगर के न अति निकट हो और न अति दूर; निर्जन और निर्बाध भी हो। जंगल के जानवरों से उन्हें कोई बाधा नहीं थी; क्योंकि वे उनसे राग-द्वेष की बातें करके, उनका समय व उपयोग खराब नहीं करते, कोलाहल नहीं करते, आपस में लड़ते-झगड़ते नहीं हैं, किसी से धोखाधड़ी नहीं करते। शाम को आकर चुपचाप बैठ जाते हैं, सवेरे उठकर चुपचाप ही चले जाते हैं। न रत में खाते-पीते, न रोते-गाते, बस जो दिनभर खाया-पीया, रात में चुपचाप बैठकर उसी की जुगाली किया करते हैं।

संयोग से उस साधुसंघ को उसी नगर के निकट एक उपयुक्त स्थान मिल गया; जहाँ ज्ञान, सुदर्शन और विज्ञान वगैरह रहते थे। साधु संघ वहाँ ठहर गया और वहीं चातुर्मास - वर्षायोग स्थापित करने का निश्चय कर लिया।

उस निर्जन-निर्बाध वन प्रदेश में बड़े-बड़े घने छायादार वृक्ष थे, वहीं एक बरामदानुमा खण्डहर-सा बहुत बड़ा मकान था। उस मकान में न किवाड़ लगे थे, न किवाड़ लगने जैसी कोई व्यवस्था ही बनी थी। केवल चारों ओर दीवारें थीं और थे बीच-बीच में छत के आधारभूत खंभे, न कोई कमरा न कोई पार्टीशन दीवारें।

साधुओं के वर्षायोग के अलावा तो वहाँ केवल जंगली जानवर ही सुस्ताया करते थे, पर हर वर्षाकाल में आस-पास विहार कर रहा कोई न कोई साधुसंघ वहाँ आ ही जाता था। साधुसंघ से उन जानवरों को भी कोई बाधा नहीं थी, बल्कि लाभ ही था। दिगम्बर साधुओं की वीतराग भाववाही परम शांत मुद्रा देखकर वे जानवर भी अपना जन्मजात वैरभाव भूल जाते थे। वहाँ किसी के आने-जाने की रुकावट तो थी नहीं, पर गृहस्थ वहाँ स्वभावत: कम ही ठहरते थे; क्योंकि वहाँ उन्हें अपने अनुकूल आरामदायक बैठने-उठने एवं सुख से समय बिताने के साधन जो नहीं थे। साधुओं के हित में भी यही था, वैसे उस जंगल में पूरा जनतंत्र था। जब जिसे आना हो आये, जाना हो जाये, रोक-टोक का कोई काम नहीं।

उस वन और भवन की बनावट से ऐसा लगता था कि संभवत: वह किसी धर्मवत्सल राजा या राजपुरुष द्वारा साधु-संतों की साधनास्थली के रूप में ही निर्मित और विकसित किया गया हो। उसे छोटा वन या बड़ा उपवन कह सकते हैं।

पुराने जमाने में ऐसे स्थानों को वसतिका कहा जाता था और उनमें साधु-संत आत्मसाधना किया करते थे।

यह नगर निवासियों का परम सौभाग्य ही समझना चाहिये कि कभी किसी उदारमना धर्मात्मा पुरुष ने वह साधुओं के धर्मसाधन का साधना स्थल बना दिया था, जिससे वहाँ के नागरिकों को सहज में ही पीढियों से धर्मलाभ मिलता आ रहा है। धर्मायतन बनाने का यही तो महत्त्व है। जिसके भी धन से वह साधन बना होगा, उसके उस द्रव्य का सबको कितना बड़ा लाभ है ? प्रतिवर्ष साधु तो लाभ लेते ही हैं, समाज भी उससे लाभान्वित होता है। वैसे तो किसी को पता ही नहीं था कि साधुसंघ कब आकर ठहर गया है; पर जब साधुगण आहार के लिये नगर में आये तो सर्वप्रथम वे दर्शनार्थ जिनमंदिर गये।

यद्यपि नग्न दिगम्बर साधुओं को जिन दर्शन पूजन एवं प्रक्षाल आदि करना अनिवार्य नहीं है; क्योंकि जो स्वयं पूज्य और दर्शन देने योग्य बन गये हैं, उन्हें अब पूजन से कोई प्रयोजन नहीं रहा; पर जहाँ जिनमंदिर होता है, वहाँ दर्शन करने वे जाते अवश्य हैं।

(क्रमश:)

(पृष्ठ 1 का शेष...)

अनंतवीर्य टीम रही। **स्लो साइकिल प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान पर विनीत जैन हटा (शास्त्री तृतीय वर्ष) तथा द्वितीय स्थान पर सागर पाटील कोल्हापुर (शास्त्री प्रथम वर्ष) रहे। **तस्तरी फेंक प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान पर आकाश हलज उगार (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं द्वितीय स्थान पर रोहन घाटे कारंजा (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे। **लम्बी कूद प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान पर अक्षय साम निप्पाणी (शास्त्री प्रथम वर्ष) एवं द्वितीय स्थान पर गौरव उखलकर कारंजा (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे। **100 मीटर दौड़ प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान पर संदेश पाटील कोल्हापुर (शास्त्री तृतीय वर्ष) एवं द्वितीय स्थान पर अक्षय साम निप्पाणी रहे। **200 मीटर दौड़ प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान पर लक्षित जैन टोकर (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं द्वितीय स्थान पर संदेश पाटील कोल्हापुर (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे। **400 मीटर दौड़ प्रतियोगिता (उपाध्याय वर्ग)** में प्रथम स्थान पर अमन जैन दिल्ली (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं द्वितीय स्थान पर अतिशय जैन इन्दौर (उपाध्याय वरिष्ठ) रहे। **400 मीटर दौड़ प्रतियोगिता (शास्त्री वर्ग)** में प्रथम स्थान पर अक्षय साम निप्पाणी एवं द्वितीय स्थान पर गौरव उखलकर कारंजा (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे। **शतरंज प्रतियोगिता** प्रथम स्थान पर अमन जैन दिल्ली (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं द्वितीय स्थान पर अरविन्द जैन बण्डा (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे। **कैरम प्रतियोगिता (एकल)** में प्रथम स्थान पर अक्षय साम निप्पाणी एवं द्वितीय स्थान पर निकुंज जैन खड़ैरी (शास्त्री प्रथम वर्ष) रहे। **कैरम प्रतियोगिता (युगल)** में प्रथम स्थान पर ममित जैन फुटेरा व चेतन जैन खड़ैरी (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं द्वितीय स्थान पर विकास जैन बड़ामलहरा व चर्चित जैन खनियांधाना रहे। **बैडमिंटन प्रतियोगिता (एकल)** में प्रथम स्थान पर पीयूष जैन टडा (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं द्वितीय स्थान पर प्रतीक जैन विदिशा (उपाध्याय वरिष्ठ) रहे। **बैडमिंटन प्रतियोगिता (युगल)** में प्रथम स्थान पर पीयूष जैन टडा व प्रतीक जैन विदिशा एवं द्वितीय स्थान पर देवांश जैन अमरमऊ व दीपक जैन बकस्वाहा (उपाध्याय वरिष्ठ) रहे।

सभी प्रतियोगिताओं का संयोजन शास्त्री तृतीय वर्ष द्वारा हुआ। इसमें सौरभ जैन फूप, रोहन घाटे, संदेश पाटील का उल्लेखनीय योगदान रहा। इस प्रकार संपूर्ण कार्यक्रम अत्यंत सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।– **जिनकुमार शास्त्री**

'तीन लोक' पर वर्कशॉप संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ आदर्शनगर स्थित मुल्तान दिगम्बर जैन मंदिर में दिनांक 4 से 9 जनवरी 2016 तक 'तीन लोक' विषय पर 6 दिवसीय वर्कशॉप का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा 'तीन लोक' विषय पर अत्यंत सरल–सुबोध शैली में प्रस्तुति दी गई।

आयोजन में जवाहर नगर, जनता कॉलोनी, बापूनगर, जौहरी बाजार आदि अनेक स्थानों से पधारे शताधिक महिलाओं, बच्चों व साधर्मियों ने लाभ लिया। प्रतिदिन प्रश्नमंच के माध्यम से बच्चों ने बहुत उत्साहपूर्वक भाग लिया।

अन्तिम दिन डॉ. नरेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित रमेशजी शास्त्री 'दाऊ', डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित राजेशजी शास्त्री एवं विदुषी ज्योति सेठी का श्री पंकजजी जैन, श्री शंभूकुमारजी जैन, श्री विनोदजी जैन, श्रीमती पाशोजी, श्रीमती मीनूजी व श्रीमती नीतूजी द्वारा जिनवाणी भेंटकर सम्मान किया गया।

महिला मंडल द्वारा आयोजित इस वर्कशॉप का संयोजन पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ द्वारा किया गया।

– मनीष जैन, मंत्री–मुल्तान दि. जैन मंदिर

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

गढाकोटा–सागर (म.प्र.) : यहाँ सागर व जबलपुर मुमुक्षु मण्डल के संयुक्त तत्त्वावधान में 250 वर्षों के पश्चात् आयोजित श्री 1008 नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव शुक्रवार, दिनाँक 25 दिसम्बर 2015 से बुधवार 30 दिसम्बर 2015 तक अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के प्रतिदिन पंचकल्याणक पर प्रवचनों का लाभ मिला। आपके अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित रजनीभाई दोशी, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित गुलाबचंदजी बीना इत्यादि अनेक विद्वानों का सानिध्य प्राप्त हुआ।

पञ्चकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा–विधि प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली द्वारा सह–प्रतिष्ठाचार्य ब्र. नन्हेलालजी सागर, पण्डित श्रेणिकजी जैन जबलपुर, पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित मनोजजी जैन जबलपुर, ब्र. सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, पण्डित अशोककुमारजी उज्जैन, पण्डित समकितजी शास्त्री सागर, पण्डित अंकुरजी शास्त्री मैनपुरी के सानिध्य में शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार संपन्न हुई।

बालक नेमिकुमार के माता–पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती चमेली–शिखरचंद जैन शाहगढ को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र–इन्द्राणी श्री अभय–वंदना मोदी शाहगढ, कुबेर इन्द्र–इन्द्राणी श्री सन्मति–सुधा चौधरी गढाकोटा एवं महायज्ञनायक–नायिका श्री सुरेशकुमार–शशि जैन ऊमरा गढाकोटा थे। यागमंडल विधान का उद्घाटन श्री इन्द्रजीतजी गंगवाल इन्दौर, प्रतिष्ठा मंच का उद्घाटन श्री संयम जैन सुपुत्र इंजीनियर श्री भीष्म जैन सागर, सिंहद्वार उद्घाटन श्री महेश सिंह ठाकुर (सुल्टू बाबू) पार्षद एवं प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन जयपुर ने किया।

महोत्सव का ध्वजारोहण श्री गोपालजी भार्गव (केबिनेट मंत्री–म.प्र. शासन) के करकमलों द्वारा किया गया।

इस महोत्सव में पार्श्वनाथ भगवान, महावीर भगवान, नेमिनाथ भगवान, मल्लिनाथ भगवान, मुनिसुव्रतनाथ भगवान, सीमंधर भगवान एवं वासुपूज्य भगवान की प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा की गई। संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, आध्यात्मिक गोष्ठियों, बालकक्षाओं, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही। संपूर्ण कार्यक्रम में लगभग 2–3 हजार साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

महोत्सव के सभी कार्यक्रम पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर एवं पण्डित अरुणजी मोदी सागर के निर्देशन में सम्पन्न हुये।– **सचिन्द्र शास्त्री**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

30 व 31 जन.2016	भोपाल (दीवानगंज)	वेदी शिलान्यास
11 से 17 फरवरी	गुना (म.प्र.)	पंचकल्याणक प्रतिष्ठा
18 फरवरी	मंगलायतन (उ.प्र.)	प्रवचन
22 से 24 फरवरी	उदयपुर (राज.)	वेदी प्रतिष्ठा
26 से 28 फरवरी	जयपुर	वार्षिकोत्सव
28 मार्च से 4 अप्रैल	सिंगापुर	शिविर
22 से 24 अप्रैल	उदयपुर (राज.)	कन्या छात्रावास का उद्घाटन

धर्म क्या, क्यों, कैसे और किसके लिए - (चौबीसवीं कड़ी, गतांक से आगे)

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

गत अंक में हमने पढा कि हमारा हित इसी में है कि हम आत्मा के अनादि–अनंत और स्वयं में परिपूर्ण स्वरूप को स्वीकार करें, अब आगे पढें–

कल्पना करो कि हमें दिल्ली जाना है और मार्ग हमें मालूम नहीं है। हम एक ऐसे चौराहे पर खड़े हैं, जहाँ से एक रास्ता दिल्ली की ओर जाता है और बाकी के तीन रास्ते हमें दिल्ली से दूर कहीं और ले जाते हैं।

अब हमें क्या करना चाहिये ?

हमारा प्रथम और सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य क्या है, दिल्ली जाने का सही मार्ग सुनिश्चित करना या कुछ और ?

यह काम कब किया जाना योग्य है, अभी या कभी और ?

कौन करेगा यह कार्य, मैं या कोई और ?

यह काम करने में कितना समय लगाया जा सकता है, सीमित या असीमित?

इस बात में कोई दो मत नहीं हो सकते हैं कि उक्त स्थिति में दिल्ली जाने वाला मार्ग सुनिश्चित करना ही सबसे महत्वपूर्ण कार्य है, जो अभी तुरन्त ही किया जाना चाहिये, यह कार्य मुझे स्वयं (जाने वाले को) ही करना होगा और इस काम में जितना भी समय लगे लगाना होगा, इसकी कोई समय सीमा या मर्यादा नहीं हो सकती है।

इस उदाहरण में थोड़ा और परिवर्तन करें –

मैं अकेला हूँ और जंगल में भटक गया हूँ।

किसी एक दिशा में मेरा घर है और अन्य सभी दिशायें घर से दूर ले जाती हैं।

जंगल में कदम–कदम पर अनेकों खतरनाक, जहरीले कीड़े–मकोड़े और अन्य हिंसक जानवर हैं।

भीषण सर्दी और बरसात का विपरीत मौसम है।

मेरे पास भोजन एवं जल सीमित है।

मैं थक चुका हूँ और थकान प्रतिपल असह्य होती जा रही है।

कुछ ही समय में रात हो जायेगी, अमावस की काली रात और तब कुछ दिखाई ही नहीं देगा, हिंसक प्राणियों का विचरण प्रारम्भ हो जायेगा। ऐसी स्थिति में क्या करना योग्य है, हमें क्या करना चाहिये और कब ?

जाहिर है हमें अपनी सारी शक्ति और क्षमता के साथ तुरन्त ही अपने घर का मार्ग तलाशने व सुनिश्चित करने के कार्य में जुट जाना चाहिये।

क्यों ?

क्योंकि न तो जहाँ हम हैं वहाँ ठहरा ही जा सकता है और न ही किसी गलत दिशा में जाने की जोखिम मोल ली जा सकती है। अधिक वक्त भी बर्बाद करने की स्थिति नहीं है क्योंकि ज्यों–ज्यों वक्त बीतेगा त्यों–त्यों हम थकते जायेंगे, हमारी भोज्य सामग्री खत्म होती जायेगी, अन्धकार बढता जायेगा और हम कहीं के न रहेंगे।

आत्मकल्याण के क्षेत्र में आज हम इसी मुकाम पर खड़े हैं।

इस संसार रूपी जंगल में हम अपना स्वरूप भूल गये हैं, मुक्ति का मार्ग भूल गये हैं। आत्मस्वरूप के बारे में अनेकों मत प्रचलित हैं, जिनमें से मात्र एक मत ही सही है व अन्य हमें अपने आत्मा से दूर ले जाकर भटकाने वाले हैं, इसलिये किसी भी एक मत को मानकर उसे अपनाने की जोखिम नहीं ली जा सकती है। वर्तमान में हम जहाँ हैं (मान्यता के स्तर पर) वहाँ अत्यंत प्रतिकूलतायें और व्याकुलता है। हमारी शक्ति दिन–प्रतिदिन क्षीण होती जा रही है और जीवन प्रतिपल समाप्ति की ओर बढ रहा है।

ऐसे में हम न तो निष्क्रिय होकर बैठे ही रह सकते हैं और न ही किसी गलत दिशा में आगे बढने का खतरा मोल ले सकते हैं। ऐसे में हमें क्या करना होगा ?

क्या करना चाहिये हमें ?

हमारे पास इसके सिवाय और कोई रास्ता ही नहीं कि हम तुरन्त ही अन्य सभी कार्य छोड़कर अपनी सम्पूर्ण शक्ति, श्रम और समय का उपयोग अपने (आत्मा के) स्वरूप का निर्णय करने में करें।

प्रश्न यह है कि यदि यही सही है तो फिर हम ऐसा करते क्यों नहीं हैं ?

इसका कारण है हमारे पास तत्संबंधी दूरदृष्टि का अभाव।

जिस तरह जंगल में भटक जाने पर हमें उसके परिणामों और संभावित खतरों का स्पष्ट आभास होता है वैसा आभास अपने (आत्मा के) स्वरूप को न समझने पर भवभ्रमण के खतरों का नहीं होता है।

क्यों ?

क्योंकि जिसप्रकार इस वर्तमान मनुष्य पर्याय में हमारी एकत्व–ममत्वबुद्धि है वैसी एकत्व–ममत्वबुद्धि हमें स्वयं आत्मा के प्रति नहीं है। वर्तमान संयोगों के प्रति इसप्रकार की इष्ट–अनिष्ट बुद्धि हमारे अन्दर विद्यमान है कि संयोगों के बिना हमें अपना अस्तित्व ही समझ में नहीं आता है, इसलिये हम संयोगों को जुटाने और मिटाने के प्रयासों में तो निरंतर व्यस्त करते हैं पर इस निज भगवान आत्मा की ओर हमारा ध्यान ही नहीं जाता है। ***(क्रमशः)***

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा

चतुर्थ वार्षिक महोत्सव

दिनांक 26 फरवरी से 28 फरवरी 2016 तक

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा फरवरी 2012 में ऐतिहासिक एवं भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया था; उस महामहोत्सव की यादें सभी को पुन: ताजा हो जावें, इस हेतु **पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का चतुर्थ वार्षिक महोत्सव दिनांक 26 से 28 फरवरी 2016 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।**

इस त्रिदिवसीय महोत्सव में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र.यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा आदि अनेक विद्वानों का प्रवचन, प्रौढ कक्षा व गोष्ठियों के माध्यम से अपूर्व लाभ प्राप्त होगा।

इसके अतिरिक्त नित्य-नियम पूजन, जिनेन्द्र भक्ति, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का भी आयोजन किया जायेगा।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन और टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के छात्रगण सम्पन्न करावेंगे।

इस मंगल अवसर पर पधारने हेतु आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

भोजन एवं आवास की समुचित व्यवस्था हेतु अपने आगमन की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें।

श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विले पारले, मुम्बई द्वारा

पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी की साधना भूमि तीर्थधाम सोनगढ़ में संचालित

श्री कुन्दकुन्द -कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह

विद्यालय की विशेषतायें

- ♦ गुजरात के श्रेष्ठ विद्यालयों में से एक चारित्र आश्रम में लौकिक अध्यापन
- ♦ पूज्य गुरुदेवश्री की आध्यात्मिक स्थली में अध्ययन का अवसर
- ♦ छठवीं से दसवीं तक की अध्यापन सुविधा
- ♦ सर्वसुविधा युक्त विशाल संकुल
- ♦ समय-समय पर विशिष्ट विद्वानों का समागम
- ♦ शारीरिक स्वास्थ्य पर पूर्ण ध्यान
- ♦ सभी सुविधायें पूर्णत: नि:शुल्क

- ♦ लौकिक अध्ययन के साथ जिनधर्म के दृढ़ संस्कार
- ♦ लगभग सभी खेलों की सुविधा
- ♦ धार्मिक विषयों का श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा अध्यापन
- ♦ वर्ष में दो बार शैक्षणिक तीर्थ यात्रा
- ♦ विशाल पुस्तकालय की सुविधा ♦ कठिन विषयों की विशेष कक्षायें
- ♦ साप्ताहिक गोष्ठियों एवं प्रतियोगिताओं के माध्यम से व्यक्तित्व विकास

प्रवेश प्रक्रिया प्रारम्भ

प्रवेश फार्म जमा करने की अंतिम तिथि 30 मार्च 2016 **प्रवेश पात्रता शिविर 20 अप्रेल से 22 अप्रेल 2016**

संपर्क : श्री कहान शिशु विहार, राजकोट रोड, सोनगढ़ जि. भावनगर सौराष्ट्र गुजरात

फोन : 02846 244510, सोनू शास्त्री : 9785643277, आतमप्रकाश शास्त्री : 7405439519 विराग शास्त्री : 9300642434

आप प्रवेश फार्म हमारी बेवसाइट www.vitragvani.com से भी डाउनलोड कर सकते हैं। email:-kahanshishuvihar@gmail.com

दृष्टि का विषय

22 छठवाँ प्रवचन -डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

अब कोई कहे कि दृष्टि के विषय में आपने अभेद के रूप में पर्याय को शामिल कर लिया ?

अरे भाई ! जो अभेद के रूप में काल को शामिल किया है, उसका नाम द्रव्य है, पर्याय नहीं।

यदि काल के अभेद के शामिल होने से किसी को पर्याय शामिल होना लगती है तो उसने पर्याय का वास्तविक स्वरूप ही नहीं समझा; क्योंकि पर्यायार्थिकनय के विषय को पर्याय कहा जाता है और द्रव्यार्थिकनय के विषय को द्रव्य कहा जाता है।

भगवान आत्मा के समस्त प्रदेशों के अलग-अलग नाम नहीं हैं। लेकिन जिसप्रकार गुणों के अलग-अलग नाम हैं, उसीप्रकार पर्यायों के भी अलग-अलग नाम हैं। जैसे – मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, केवलज्ञान आदि।

मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, केवलज्ञान आदि नाम सापेक्ष नाम हैं; क्योंकि इनमें कर्म की अपेक्षा है। जैसे – मतिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से जो ज्ञान हो, उसका नाम मतिज्ञान है। वास्तव में ज्ञान सामान्य में कोई अन्तर नहीं है।

ज्ञान में जो इतने भेद हैं; वे भेद तो कर्म की अपेक्षा हैं, ज्ञेय की अपेक्षा हैं। इतिहास को जाननेवाले ज्ञान को इतिहास का ज्ञान कहते हैं और भूगोल को जाननेवाले ज्ञान को भूगोल का ज्ञान कहते हैं। इतिहास और भूगोल तो ज्ञेय हैं। **ज्ञेय के भेद से ज्ञान में भेद खड़ा करना – उसका नाम तो व्यवहार है।** वास्तव में ज्ञान तो ज्ञान है, ज्ञान में कोई भेद नहीं है। ज्ञान तो जैसा है, वैसा ही है। ज्ञान ने जिस ज्ञेय को जाना, उस ज्ञेय की अपेक्षा से हम ज्ञान में भेद खड़ा कर देते हैं।

इसप्रकार केवलज्ञान विशिष्ट पर्याय है, इसलिए वह दृष्टि के विषय में शामिल नहीं है। दृष्टि के विषय में विशिष्ट पर्याय का ही निषेध है, काल के अभेद का निषेध नहीं।

मैं बार-बार 'काल के अभेद' शब्द का ही प्रयोग कर रहा हूँ; क्योंकि यदि ऐसा कहता हूँ कि 'पर्यायों के अभेद' दृष्टि के विषय में शामिल है तो लोगों को ऐसा लगता है कि दृष्टि के विषय में पर्याय को शामिल कर लिया है।

अरे भाई ! पर्यायों का अभेद तो द्रव्यार्थिकनय का विषय होने से द्रव्य है, पर्याय नहीं। इसप्रकार पर्यायों का अभेद अथवा काल का अभेद दृष्टि के विषय में शामिल है।

इसी संबंध में समयसार अनुशीलन का निम्न कथन दृष्टव्य है–

''भूतकाल की पर्यायें तो विनष्ट हो चुकी हैं, भविष्य की पर्यायें अभी अनुत्पन्न हैं और वर्तमान पर्याय स्वयं दृष्टि है, जो विषयी है; वह दृष्टि के विषय में कैसे शामिल हो सकती है ?

विषय को बनाने के रूप में तो वह शामिल हो ही रही है; क्योंकि वर्तमान पर्याय जबतक द्रव्य की ओर न ढले, उसके सन्मुख न हो, उसे स्पर्श न करे, उससे तन्मय न हो, उसमें एकाकार न हो जाये; तबतक आत्मानुभूति की प्रक्रिया भी सम्पन्न नहीं हो सकती।

इसप्रकार वर्तमान पर्याय अनुभूति के काल में द्रव्य के सन्मुख होकर तो द्रव्य से अभेद होती ही है, पर यह अभेद अन्य प्रकार है, गुणों और प्रदेशों के अभेद के समान नहीं।[१]''

सभी पर्यायें पर्यायार्थिकनय का विषय होने से दृष्टि के विषय में शामिल नहीं हैं; लेकिन जो पर्यायों का अभेद अर्थात् काल की अखण्डता है, वह द्रव्यार्थिकनय का विषय होने से दृष्टि के विषय में शामिल है।

विषय बनाने के रूप में विशिष्ट पर्याय को भी दृष्टि के विषय में शामिल करते हैं। इसी संबंध में ऐसा कहा भी जाता है कि दृष्टि अन्तर्मुख हो गई।

एक उदाहरण भी दिया जाता है कि जो बिजली का तार होता है, उसमें करंट तबतक नहीं आता है, जबतक वह पावर हाऊस (करंट के घर) को स्पर्श नहीं करेगा।

उसीप्रकार जबतक पर्याय द्रव्य को स्पर्श नहीं करेगी, तबतक पर्याय में केवलज्ञान नहीं होगा। स्वभाव में तो सर्वज्ञत्व शक्ति पड़ी हुई है, लेकिन जबतक पर्याय, उस स्वभाव कास्पर्श नहीं करेगी तो उसमें केवलज्ञान कहाँ से आएगा ? इस अपेक्षा से पर्याय दृष्टि के विषय में शामिल है अर्थात् दृष्टि के विषय में मिली हुई है।

पर्याय ने स्वभाव का आश्रय लिया, इसलिए पर्याय दृष्टि के विषय में शामिल है – यह भी एक अपेक्षा है। **(क्रमशः)**

१. समयसार अनुशीलन, भाग १, पृष्ठ-७६-७७

गुरुदेवश्री के अनमोल रतन

जिनधरम जिनधरम जिनने समझा मरम।
उन गुरुजन के नित गीत हम गायेंगे।।
घोर अज्ञान छाया है संसार में।
जो मिटाते उन्हें कैसे विसरायेंगे।।१।।

छोटे दादा जिन्हें हम सभी बोलते।
डॉ. भारिल्ल सारा जगत जानता।।
पूज्य गुरुदेव श्री के हो अनमोल रतन।
तत्त्ववेत्ता को अब कौन न मानता।।२।।

तत्त्व का ज्ञान गुरुदेव से प्राप्त कर।
ज्ञान गंगा बहा दी लिपीबद्ध कर।।
सारा जीवन समयसारमय कर लिया।
गूँजती आरती आज सादर अमर।।३।।

देव गुरु शास्त्र की पूजा लिख दी गजब।
सत्य दर्शन कराया सरल ढंग से।।
सूत्र क्रमबद्ध के भी पिरोये सरल।
जैनदर्शन की प्रस्तुति नये रंग से।।४।।

ज्ञानानंदी स्वभावी हूँ मैं गीत लिख।
आज ये राष्ट्र का गीत है बन गया।।
हर प्रसंगों में हम गुनगुनाते सदा।
धर्म का मर्म सारा गजब भर दिया।।५।।

श्री समयसारजी पर चली लेखनी।
हार्द कुंदकुंद का तुमने घोषित किया।।
और क्रमबद्ध पर जब चली मृदुकलम।
इस अमर कृति ने निर्भार जग कर दिया।।६।।

धर्मदशलक्षणी बन गई वाटिका।
पर्व सार्थक सभी भव्य जन कर रहे।।
साधु जन श्रेष्ठीजन जिनने इसको पढ़ा।
धन्य हो धन्य हो दादा सब कह रहे।।७।।

सात सौ शास्त्री के शिल्पी दादा तुम्हीं।
जैन शासन ध्वजा आज लहरा रहे।।
मंगलायतन सिद्धायतन या ध्रुवधाम हो।
ज्ञान ज्योति जला मोह तम हर रहे।।८।।

आप अमिताभ बच्चन हो जिनधर्म के।
आप गुरुदेव के श्रेष्ठतम रतन हो।।
आप टोडरमलजी की प्रतिमूर्ति हो।
आप ग्रन्थों के गणधर अजब हो चमन।।९।।
एक ही व्यक्ति में ढेर गुण भर दिये।
विश्व की हो धरोहर करूँ मैं नमन।।
जुगनु सम हम करें क्या गुणों का कथन।
करना हमको क्षमा बस नमन शत नमन।।१०।।
आपसे शोभीत हैं सभायें सदा।
शोभते हैं शिविर तीर्थ आराधना।।
आप बिन शून्य लगती हैं मानो हो जो।
बिन नमक खीर खाजा विफल योजना।।११।।
दीर्घायु हो हम भावना भा रहे।
ज्ञान वैभव सदा तुम लुटाते रहो।।
सबको सन्मार्ग जिनमार्ग देते रहो।
सिद्धपद साधू संग संग हमें ले चलो।।१२।।
भावना बारह इतनी सरल रच दी।
कंठ में बस गई ज्ञान वैराग्यनी।।
जिनवरस्य नय रहस्य आँखें बंद खोल दी।
जैन शासन के सेवी अमर बंदगी।।१३।।

– पं. राजेन्द्रकुमारजी जैन, जबलपुर

अन्तरराष्ट्रीय यूथ कन्वेन्शन संपन्न

देवलाली–नासिक (महा.) : यहाँ पूज्य कानजीस्वामी ट्रस्ट के वार्षिक उत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित 'इन्टरनेशनल यूथ कन्वेन्शन' **(IYC)** –युवा शिविर दिनांक 25 से 29 दिसम्बर तक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के मार्गदर्शन के अतिरिक्त पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर, पण्डित हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित सुनीलजी शास्त्री राजकोट आदि विद्वानों का समागम प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में लगभग 100 युवाओं ने भाग लिया।

कन्वेन्शन में जीव का अस्तित्व, वस्तु व्यवस्था, सुख, धर्म, सदाचार आदि अनेक विषयों पर प्रतिदिन 5 घंटे चर्चा हुई।

कार्यक्रम का संचालन एवं संयोजन पण्डित देवांगजी गाला मुम्बई, अनुभवजी जैन पुणे, श्री सोमिलजी मेहता, पण्डित किशोरजी शास्त्री, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री, पण्डित प्रफुल्लजी शास्त्री, ब्र. चेतनाबेन, विदुषी प्रज्ञा जैन एवं विदुषी ज्ञप्ति जैन मुम्बई द्वारा किया गया। इसके अतिरिक्त देवलाली ट्रस्ट एवं आयोजकों का भी सहयोग प्राप्त हुआ।

क्रमबद्धपर्याय पर गोष्ठी संपन्न

गढाकोटा-सागर (म.प्र.) : यहाँ पंचकल्याणक के अवसर पर दिनांक 28 दिसम्बर को क्रमबद्धपर्याय विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी की अध्यक्षता तत्त्ववेत्ता डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल ने की। मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. ए.डी. शर्मा (विभागाध्यक्ष-दर्शनविभाग, डॉ. हरसिंगगौर विश्वविद्यालय, सागर) एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने क्रमबद्धपर्याय व अकाल मृत्यु पर क्रमबद्धपर्याय व वस्तु स्वतंत्रवाद पर अपना वक्तव्य दिया। इसके अतिरिक्त पण्डित सन्मतिजी शास्त्री ने क्रमबद्धपर्याय का सामान्य स्वरूप, पण्डित विरागजी शास्त्री ने क्रमबद्धपर्याय-आगम के परिप्रेक्ष्य में, पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने क्रमबद्धपर्याय व सर्वज्ञता, पण्डित अशोकजी इन्दौर ने क्रमबद्धपर्याय और पुरुषार्थ, डॉ. वीरेन्द्रजी शास्त्री बरा ने क्रमबद्धपर्याय से विश्वशांति तथा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने क्रमबद्धपर्याय और आत्मानुभूति विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का संयोजन सचिन्द्रजी शास्त्री एवं संचालन डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ ने किया।

शोक समाचार

(1) श्री टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक श्री हेमंत जगदीशचंद्र बेलोकर की दादी **डासाला (बुलढाणा-महाराष्ट्र) निवासी श्रीमती रत्नमालाबाई गुलाबचंद बेलोकर** का दिनांक 29 दिसम्बर को संयम-साधनापूर्वक शांतपरिणामों के साथ देहपरिवर्तन हुआ। आप अत्यंत स्वाध्यायी थीं। गुरुदेवश्री कानजीस्वामी से आप अत्यंत प्रभावित थीं। दिनभर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन सुनना व स्वाध्याय यही आपकी दिनचर्या थी। आपके संस्कारों व प्रभाव के ही कारण आपका पूरा परिवार स्वाध्याय व तत्त्वप्रचार के कार्य में संलग्न है तथा डासाला स्थित दिगंबर जैन मंदिर के जीर्णोद्धार के कार्य में समाज का नेतृत्व कर रहा है।

आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान व जैनपथप्रदर्शक हेतु 1000-1000/- रुपये की राशि प्राप्त हुये।

(2) श्री टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित शिखरचंदजी शास्त्री के पिताजी **शाहगढ (म.प्र.) निवासी श्री अमृतलालजी जैन** का 94 वर्ष की आयु में दिनांक 5 दिसम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान व जैनपथप्रदर्शक हेतु 500-500/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न

जयपुर (राज.) : (1) यहाँ टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय द्वारा होने वाली गोष्ठियों की शृंखला में दिनांक 17 दिसम्बर को 'समयसार के परिप्रेक्ष्य में कर्तृ-कर्म मीमांसा' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में पीयूष जैन (शास्त्री द्वितीयवर्ष) एवं गौरव उखलकर (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण भूपेन्द्र जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने तथा संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के विशाल जैन एवं अमित धर्मन्नावर ने किया।

(2) दिनांक 23 दिसम्बर को 'वीतरागी देव तुम्हारे जैसा जग में देव कहाँ' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित उदयजी चौगुले ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में समर्थ जैन (उपाध्याय कनिष्ठ), सोमिल जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं समकित जैन (शास्त्री प्रथम वर्ष) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण सम्यक् जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने तथा संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के अभिषेक जैन एवं स्वप्निल वायकोस ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित गोमटेशजी चौगुले ने किया।

(3) दिनांक 24 दिसम्बर को 'आओ जानें द्रव्य-गुण-पर्याय को' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित प्रमोदजी शास्त्री ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में सम्मेद खोत (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं प्रतीक जैन (शास्त्री प्रथम वर्ष) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण अनिकेत जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने तथा संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के अरविन्द जैन बण्डा एवं रोहन घाटे ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

सभी गोष्ठियों का संयोजन शास्त्री तृतीय वर्ष के अच्युतकांत जैन व सौरभ जैन फूप ने किया।

प्रकाशन तिथि : 13 जनवरी 2016

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127